पोट्टेक्काट्ट की श्रेष्ठ कहानियां

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार द्वारा
सम्मानित मलयालम के
अग्रणी कथाकार की कहानियां

पोट्टेक्काट्ट की श्रेष्ठ कहानियां

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार द्वारा
सम्मानित मलयालम के
अग्रणी कथाकार की कहानियां

पोट्टेक्काट्ट की श्रेष्ठ कहानियाँ

मूल रचना : एस० के० पोट्टेक्काट्ट
हिंदी रूपांतर : पी० कृष्णन

संपादक
शानी

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
२३, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं
चौड़ा रास्ता, जयपुर
३४, नेताजी सुभाष मार्ग, इलाहाबाद-३

डॉ० नामवर सिंह
के लिए—

आभार

किसी कालजयी रचनाकार के कृतित्व को प्रकाशित करके एक प्रकाशक को आंतरिक सुख मिलता है। निस्संदेह मलयालम के महान् कथाकार श्री एस० के० पोट्टेक्काट्ट की दस श्रेष्ठ कहानियों का यह संग्रह प्रकाशित करके इसी तरह के सुख का अनुभव हो रहा है। श्री पोट्टेक्काट्ट जी के प्रति हम विनम्र आभारी है, जिन्होंने यह महत्त्वपूर्ण अवसर दिया।

इस संग्रह के प्रकाशन में श्री विष्णु खरे, श्री शानी और श्री पी० कृष्णन का बहुमूल्य सहयोग मिला है। हम इनके प्रति भी आभारी है।

—कन्हैयालाल मलिक
मैनेजिंग डायरेक्टर
नेशनल पब्लिशिंग हाउस

अपनी जड़ों पर खड़ा बरगद का एक पेड़

"अपने अनुभवों, भावों और विचारों की व्यापक ढंग से अभिव्यक्ति के लिए कथा-साहित्य का माध्यम ही ज्यादा सक्षम है।"

मलयालम के विख्यात लेखक एम० के० पोट्टेक्काट्ट ने यह तब कहा था जब उन्होंने कविता से विदा ली थी और अपने को पूरी तरह कथा या गद्य-लेखन के लिए केंद्रित कर लिया था। प्रायः अधिकांश लेखकों की तरह एम० के० ने भी अपना साहित्यिक जीवन कविता से आरंभ किया था, लेकिन बहुत जल्द उन्हें लगा कि इस बहुरंगी जिंदगी के विकराल यथार्थ का सामना जिस औजार से किया जाना चाहिए उसके लिए कविता छोटी या नाकाफी विधा है या शायद यह कि गद्य कहीं ज्यादा कारगर, सार्थक और आधुनिक माध्यम है।

और यह संयोग नहीं है कि एम० के० पोट्टेक्काट्ट ने इसे अपने ही ऊपर चरितार्थ कर अपनी ही बात को प्रमाणित भी कर दिया—यह अलग बात है कि उन्होंने तो कविता को छोड़ दिया लेकिन कविता ने उनके गद्य को कभी नहीं छोड़ा। चाहे वह भीतर की दुनिया हो या बाहर की, प्रकृति हो या परिवेश, आदमी का बखान करना हो या जानवर

का, उनकी दृष्टि हमेशा कवि-जैसी गहरी, चित्रात्मक और अनेक स्तरों-चेहरों वाली बनी रही। जिस लेखक ने कविता, उपन्यास, नाटक, निबंध, यात्रा-संस्मरण आदि सारी विधाओं में पचास कृतियां दी हों उसकी कहानियों को देखना, पढ़ना या समझना अपने को समृद्ध करना है।

इसी दृष्टि से पोट्टेक्काट्ट की दस श्रेष्ठ कहानियां यहां संकलित हैं। ऐसा नहीं है कि उनकी और कहानियां श्रेष्ठ नहीं हैं या जिस लेखक ने असंख्य कहानियां दी हों उसके यहां श्रेष्ठ कहानियों का टोटा हो सकता है। इन दस कहानियों के चुनाव के पीछे एक यह दृष्टि जरूर रही है कि एक ओर तो कथाकार पोट्टेक्काट्ट के विविध आयामी अनुभवों का परिचय हिंदी के पाठकों के सामने रखा जा सके और दूसरी ओर वह लेखकीय क्षमता भी उजागर हो जिसके चलते चौतरफा घूमनेवाली बारीकबीनी आती है। उनके पात्र गरीब भी हैं, मुफलिस भी और धन्नासेठ भी। वर्ग उन्हें सीमित नहीं करता और न उनकी संवेदना को कम करता है। जितनी सहजता से वे मानवीय समाज के समसामयिक यथार्थ का बखान करते हैं उतनी ही आसानी, उसी गहराई और उसी मर्मभेदी आंख से जानवरों की दुनिया में चले जाते हैं और वहां से अद्‌भुत कहानियां लाते हैं। जिस शक्ति से वे एक फटेहाल और मेहनतकश आदमी के संघर्ष और उसकी नियति को चित्रित करते हैं, उसी ऊर्जा से लाखों में खेल रहे व्यक्ति के भाग्य की विडंबना भी वे निरूपित करते हैं। वे पक्षधर हैं तो कुछ मूल्यों के, विरुद्ध खड़े हैं तो उन सबके जो पाखंड है, मिथ्या है, ढोंग है और वह सब जो एक बेहतर दुनिया के निर्माण में बाधक है।

वास्तव में पोट्टेक्काट्ट का अनुभव-संसार हैरान करने वाला है—दक्षिण के गांवों से लेकर दक्षिण अफ्रीका के भयावह जंगलों तक इसका विस्तार है। 'ववहे-री' और 'शिकारी' ऐसी ही कहानियां हैं जो आपको अपने भौगोलिक संसार से हजारों मील दूर एक हैबतनाक दुनिया में ला खड़ा करती हैं जहां से आप अपने-आप वापस लौटते हैं अपनी उन जड़ों की ओर जिनके बगैर एक छोटे से छोटा पौधा भी मर जाता है। दरअस्ल, पोट्टेक्काट्ट समकालीन भारतीय साहित्य के उन इने-गिने लेखकों में से

कहानी-क्रम

पागल कुत्ता	१
ववहे-री	८
वैज्ञानिक की पत्नी	१८
शिकारी	२६
पुरस्कार	३३
वधू	४४
कलाकार	५७
पुराना कर्ज	६४
धर्मशाला में	७२
सेतु	८५

पोट्टेक्काट्ट की
श्रेष्ठ
कहानियां

पागल कुत्ता

सूर्योदय हुए दो घंटे बीत चुके थे, पर किरन उठे बगैर टूटी-फूटी चारपाई पर ओढ़ी हुई धोती में मुंह ढक कर लेटा हुआ था। उसकी नींद हराम हुए बड़ी देर हो चुकी थी। गंदे काले कपड़े के भीतर वह एक मेंढक के समान आंखें तरेरे बिना हिले-डुले पड़ा रहा था।

आधे घंटे के बाद वह धीरे से उठा। धोती पुनः ओढ़ ली। सिर दो-तीन मर्तबा खंखारते हुए आंगन में उतरकर उसने चारों तरफ नजरें घुमाईं।

किरन की बुढ़िया मां की उम्र नब्बे से कुछ अधिक होगी—रोशनी में चौंधियाए उल्लू की तरह आंखें मूंदकर आंगन में वह अनमनी बैठी थी। उसका छः बरस का मुन्ना चातन एक काठ के टुकड़े के छोर पर रस्सी बांधकर गाड़ी-गाड़ी खेल रहा था।

किरन ने झोंपड़ी के सामने के विस्तृत खेतों को देखा। पावस की फसल के बाद सुनसान धान के खेतों में अभी काम की शुरुआत नहीं हुई थी। फसल काटने के बाद जो अनाज मिला था सबका सब

वे खा चुके थे। चावल का पानी पीकर दो-तीन रोज में गुजर हो रही थी।

उसकी पत्नी भीतर से कराह उठी। वह आसन्न-प्रसवा थी लेकिन किरन के हाथ में पच्चीस पैसे के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

किरन धीरे-धीरे खेत की तरफ चला। वह एक गड्ढे के किनारे झुककर खड़ा हो गया। हाथों में पानी लेकर एक-दो बार चेहरे को धोया। और धोती से चेहरे को पोंछकर सीधे वह सड़क की ओर निकल पड़ा।

सड़क पर एक दूकान के सामने लोगों की खड़ी भीड़ थी। अतः वह उस ओर आकृष्ट हुआ।

रामन नायर और अलि माप्पिला बातें कर रहे थे।

"अरे, रामन नायर, कुंचु कुरुप की दूकान के सामने लोगों की इतनी भीड़ क्यों लगी है?"

"अपने चापुण्णि नायर का लाल कुत्ता है न, वह पागल हो गया है। पांच कुत्तों और एक गाय को अभी तक काट चुका है। आज सुबह वण्णान केलु के लड़के को भी काट खाया। केलु लड़के को अस्पताल में भरती कराने के लिए अधिकारी का सर्टिफिकेट मांगने आया है।"

"अधिकारी के सर्टिफिकेट की क्या जरूरत है?"

हस्पताल में खर्चे के लिए हर रोज आठ-दस रुपए मिलते हैं।

अलि माप्पिला उस भीड़ में अपने आप घुस गया। केलु लड़के को गोद में बिठाए हर एक के चेहरे को बदहवासी से घूर रहा था।

"अरे, केलु बच्चे को लेकर अधिकारी के यहां फौरन चले जाओ। वे अपने घर पर ही होंगे।" चंदन ने केलु को सलाह दी। केलु लड़के को कंधे पर उठाए अधिकारी के घर की तरफ निकल चला। भीड़ कई रास्तों पर तितर-बितर हो गई थी। किरन भी वापस लौट चला।

करुप्पन की चाय की दूकान के सामने सड़क के नजदीक वह घुटने टेक बैठ गया और जोर से चिल्लाया। "तंत्रान, आधा गिलास चाय।"

दस मिनट के बाद दूकानदार ने एक गिलास चाय किरन के सामने

रखकर कहा—"चीनी तेज, चाय की पत्ती तेज । कड़क चाय है ।"

दुकानदार इसकी आदत से परिचित है । अक्सर वह पहले आधी चाय का आदेश देता है । चाय आने पर कहता है, "चाय की पत्ती कुछ ज्यादा है, थोडा चाय का पानी लाओ ।" फिर जब गिलास भर चाय का काढा आ जाता है तो वह शिकायत करेगा कि तंब्रान, चीनी कम है । चीनी डालने पर आधी चाय फुल चाय में तब्दील हो जाती है ।

दुकानदार की चेतावनी से मन ममोसकर किशन ने चाय का गिलास दोनों हाथों में पकड लिया । फूंक मारकर चाय का घूंट लेने लगा । हर घूंट के साथ वह बगैर जरूरत अपना सिर हिलाता जाता था । आधी चाय पीने के बाद दूकान की मेज के ऊपर सूखे केले के पत्ते पर रखी हुई पत्तिरियों (एक स्वादिष्ट पकवान) पर उसकी ललचाई नजर पडी ।

चाय के साथ कुछ खाने की जरूरत थी, पर पैसे तो नहीं थे ।

"एक टुकडी पत्तिरि,—पत्तिरि का पैसा कल दूंगा ।" आखिरी वाक्य उसने धीरे से कहा था ।

"पैसा नहीं है तो पत्तिरि नहीं मिलेगी ।" दुकानदार ने रुखाई से कहा—"तू जल्दी से चाय पीकर गिलास वापस कर ।"

हताश किरन ने बेवकूफी की हंसी बिखेरते हुए गिलास में बची चाय की आखिरी बूंद भी पी ली । फिर आंचल में बंधे हुए पच्चीस पैसे गिलास के सामने रखकर उठ गया ।

बहुत देर तक वह बिना जरूरत उस सड़क पर घूमता रहा । एक घंटा बीत गया । वण्णान केलु को अधिकारी के घर से वापस लौटते हुए उसने दूर से ही देख लिया था । केलु के जाने से क्या बना यह जानने की उत्सुकता लिए रास्ते से कुछ दूर हटकर प्रतीक्षा करने लगा ।

"अधिकारी तंब्रान के यहां से सर्टिफिकेट मिला !" किरन ने पूछा ।

"मिल गया ।" केलु ने कहा, "अब हम जा रहे हैं ।"

"पैसे-वैसे कुछ मिले ?"

"लगता है, हर रोज दस रुपए मिलेंगे । इक्कीस सुई लगानी

होंगी।" केलु ने मुड़कर देखे बिना बताया और आगे बढ़ गया।

किरन पुनः खेत में उतर गया। उन विस्तृत सुनसान खेतों में सिर झुकाकर चलते हुए किरन के मस्तिष्क में पागल कुत्ते और दस रुपए की तस्वीर झिलमिलाने लगी थी।

उस रात को बड़ी देर के बाद ही वह अपनी झोंपड़ी में पहुंच पाया था। दिन-भर किसी ने भी वहां 'चावल' की एक बूंद तक नहीं पी थी। शाम को उसकी गर्भवती पत्नी सारी कठिनाइयां उठाकर नजदीक के अहाते से ढेरों लोमशबीजी और हरी पत्तियां तोड़ लाई थी। उसे पकाकर खाने के बाद वे सब सो चुके थे।

अगले दिन लड़के की चीख और चेरुमन चात्तन की 'हाय-हाय पागल कुत्ता' की खौफनाक पुकार सुनकर ही चेरुमी (चात्तन की पत्नी) जागी थी। एक बड़ा डंडा लिए घर के चारों ओर दौड़ रहा था। पत्नी के पास दौड़ आते ही उसने बताया, "अरी, बरामदे में लेटे हुए बेटे को पागल कुत्ते ने काट खाया।"

चेरुमी ने किरन के चेहरे की ओर आंखें तरेरकर देखा। किरन के दांत खून से सने थे। चेरुमी ने ताज्जुब और शक के साथ पूछा, "आपके दांतों में खून कैसे?"

किरन ने दहशत के साथ मुंह का खून धोती के आंचल से पोंछते हुए चेरुमी को धमकाया, "अरी, अब तू बक-बक मत कर।"

चेरुमी ने लड़के को देखा। उसके पैर से खून बह रहा था और वह गला फाड़कर रो रहा था। लेकिन वहां सचमुच क्या हुआ यह लड़के को भी मालूम नहीं था।

हल्ला-गुल्ला सुन पड़ोस के घरों से ही नहीं कुछ राहगीर भी वहां जमा हो गए। किरन उनमें हर एक शख्स से इस घटना का खौफ और विवाद के साथ बखान करता जा रहा था कि कैसे पागल कुत्ते ने अचानक आकर बरामदे में सोए लड़के के पैरों में काट लिया। और कैसे दक्षिण दिशा के केवड़े के जंगल में नदारद हो गया।

"लाल रंग का कुत्ता था। दुम उस की टांगों के नीचे सिमटी हुई थी। मुंह खुला था। जीभ थी बाहर। उसके मुंह से सफेद झाग निकल

रहे थे। हांफ-हांफकर वह दौड़ रहा था।"

"हां, पागल कुत्ता ही है।"

अहीर गोपाल ने अपनी राय जाहिर की, "चाप्पुण्णि नायर का कुत्ता ही होगा। सुना था, कल वण्णान केलु के छोकरे को भी उसने काट खाया था।"

"उसे जिंदा नहीं छोड़ना चाहिए। देखते ही डंडों और पत्थरों से उसका काम तमाम कर देना चाहिए।" कलाल चातु ने गुस्से से कहा, "वह हरामी कुत्ता भाग किधर गया!"

"तंब्रान, मैंने सिर्फ एक ही दफा देखा था। फिर पता नहीं वह शैतान जाने कहां गायब हो गया।"

सुबह बरामदे में आने पर अधिकारी के सामने लडके को कंधे पर लिए अदब से खड़ा होने वाला किरन ही था।

अधिकारी को बरामदे में देख किरन ने लडके के पैरों को नोच लिया और गुस्से से बोला, "अरे, तू रो भी तो सही।"

चात्तन बतियाने लगा।

"अरे, तू क्यों, इधर कैसे?" अधिकारी ने पूछा।

"तंब्रान, मुझ गुलाम के लडके को पागल कुत्ते ने काट लिया। इूहीं···।"

चेरुमन भी रोने लगा।

"फिर कुत्ते को नहीं मारा?"

"तंब्रान, कुत्ता भाग निकला।"

"गधा कहीं का, और तू देखता ही रह गया! कुत्ता किसका था?"

"चाप्पुण्णि तंब्रान का लाल कुत्ता।"

"जिसने कल वण्णान के छोकरे को काटा था वही कुत्ता?"

"हां, तंब्रान, वही था।"

"अरे, यहां के लोग निरे कायर और मूर्ख हैं। एक पागल कुत्ते को मारने का भी हौसला नहीं है। हरामजादे!" अधिकारी बक-झक करता हुआ कुर्सी पर बैठ गया। कुछ रुक कर बोला, "अबे, अब इसके लिए मुझे क्या करना है?"

"चट्टीफीट्ट" (सर्टिफिकेट)...।
अधिकारी ने प्रमाणपत्र दिया कि किरन के लड़के को आज पागल
ने काट खाया है। चात्तन को कंधे पर लाद कर किरन शहर के
पताल की ओर चला।

एक पतले-दुबले शख्स ने लड़के की नाक पर सुई लगाई। लड़का
ला फाड़ कर रोने लगा। चेरुमन ने लड़के को पकड़कर दबा रखा
या।

उस दिन किरन खुशी-खुशी झोंपड़ी में वापस पहुंचा। गमछे में
एक किलो चावल और दो-तीन केले बंधे हुए थे। हाथ में मछली थी।
उसके कंधे पर पड़ा थका-मांदा चात्तन सो रहा था। अस्पताल से राह-
खर्च के लिए मिले पैसों में से सिर्फ एक रुपया ही उसने ताड़ी के लिए
खर्च किया था।

चार दफा इंजेक्शन लगते ही चात्तन का शरीर फूलने लगा। उसके
लिए उठना दूभर हो गया लेकिन फिर भी किरन लड़के को उठाकर
ठीक समय पर रोज अस्पताल ले जाता।

"अपने लड़के को पागल कुत्ते ने काट खाया था। अधिकारी तंब्रान
ने 'चट्टीफीट्ट' दिया है। इंजेक्शन के लिए अस्पताल ले जा रहा हूं।"
देखने वालों को वह शान से बताता था।

सात इंजेक्शन लगने तक लड़के ने चारपाई पकड़ ली।

"बाबू जी, मुझे सुई मत लगाइए।" लड़का क्रंदन करता, पर वह
किरन को नहीं छू पाया। डाक की थैली कंधे पर रखकर जिस प्रकार
डाकिया ठीक समय पर निकलता है उसी प्रकार लड़के को उठाकर वह
भी चल पड़ता।

ग्यारह इंजेक्शन के बाद लड़के की देह फूलने लगी। वह पीला प[illegible]
गया। उस हालत में डाक्टर ने इंजेक्शन देने से इनकार कर दिया।

"अब कुछ दिन तक लड़के को मत लाओ।" डाक्टर ने कहा था[illegible]
सुनकर किरन का चेहरा एकदम पीला पड़ गया। वह लड़के को ले[illegible]
झोंपड़ी में वापस लौट आया।

अगले दिन किरन ने देखा कि चात्तन बेहोश होकर चारपाई[illegible]

पड़ा हुआ है। उसमें सिर्फ एक खौफनाक कराह ही बची थी।

"बेटे, बेटे चात्तन, मुन्ने!" किरन ने हमदर्दी से रोते हुए पुकारा। चात्तन न हिला, न डुला। कुछ देर के बाद उसकी सांस भी रुक गई। किरन ने खौफनाक स्वर में अपनी चेरुमी को पुकारा लेकिन वहां अभी-अभी जनमे बच्चे की आवाज ही जवाब में सुनाई पड़ी।

किरन पागल की तरह झोंपड़ी से बाहर निकला और तेज-तेज दौड़ने लगा△

क्वहे-री

नैरोवी के अपने मित्र मि० गोमस की चिट्ठी पढ़कर मैं वहुत देर तक खोया हुआ वैठा रह गया। इस पत्र की अंतिम खवर ने मेरे दिल को छू लिया था :

"साली को गोरों ने गोली से उड़ा दिया है।"

चार साल पहले कन्याकुमारी में विताए गए दिन मेरी कल्पना में तैरने लगे। उन दिनों केनिया में 'मूमू' संस्था की शुरुआत नहीं हुई थी। मूमू संघ के सदस्यों के कटे सिरों के लिए सरकार ने मेहनताना की घोपणा भी नहीं की थी। काप्पिरि शहरों में 'किक्कियु' घर-वार के नौकर-चाकर वनकर और मोहल्लों में खेती-वाड़ी कर शांति से गुजारा कर रहे थे। पर उनकी नजरों में अतृप्ति और उन पर किये जुल्मों की झुंझलाहट की परछाई दिखाई पड़ती थी। यह परछाइयां एक दावाग्नि का रूप धारण कर केनिया को तवाह करेंगी ऐसा ख्याल तव किसी को नहीं था। आने वाली क्रांति के संवंध में जिस एक आदमी ने मुझे चेतावनी दी थी, वह मिस्टर साली ही था।

मि० गोमस का पत्र पढ़कर साली ने मुझे जो बातें सुनाई थीं उस की याद ताजा हो गई।

"ये किकियु एकजुट होकर लड़ने को कमर कस लें तो गोरों को अपना-सा मुह लेकर भागना पड़ेगा। चालीस लाख काफ्रिर और एक लाख भारतीय केनिया में हैं। इनके विरुद्ध सिर्फ सत्ताईस हजार गोरे क्या कर सकते हैं?"

"लिविंग्स्टन पातिरि ने मुहब्बत से जिन काफ्रिर मुल्कों को जीत लिया था उन पर गोलियों से शासन करने की गोरों की मुराद निराशा में ही तब्दील होगी।" एक गोरे ने बताया था।

उसका असली नाम मेल्स था लेकिन साली नाम से ही वह मशहूर था।

मोंबासा से नैरोबी तक की रेल-यात्रा में ही मैं पहले-पहल उससे परिचित हो गया था। उस शाम को गाड़ी की 'डाईनिंग कार' में मैं चाय पी रहा था। मेरे बगल में एक गोरा बीयर की बोतल और गिलास सामने रखे गाड़ी की खिड़की से अफ्रीका के प्राकृतिक दृश्यों को देख रहा था।

तांबिया बाल, नीली आखें, लंबे कान, सुंदर गालों वाले उस आदमी ने अचानक मेरी ओर निगाहें घुमाकर पूछा, "मिस्टर, आप नैरोबी जा रहे हैं?"

"हां, मैं नैरोबी जा रहा हूं। और आप?"

"मैं नय्येरी जा रहा हूं—'वोय' स्टेशन पर उतरूंगा।"

मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह गोरा मुझमें दिलचस्पी लेगा। अफ्रीका के कालों के सम्मुख गोरों के भाव और सुलूक का ढंग और ही होता है। गोरा कालों के बीच में फंस जाने पर अपनी त्वचा की गरिमा का प्रदर्शन कर चुप्पी साध लेता है। कालों से अंग्रेजी में पूछताछ करने से उसकी वरीयता को आंच आती है। अगर बातचीत करनी है तो 'स्वहिलि' का इस्तेमाल करता है।

कुछ देर तक हम दोनों ने चुप्पी साध ली। उसने बाहरी दृश्यों पर निगाहें डाली। मैं भी उन जंगलों के दृश्यों को ताकने लगा।

गाड़ी ऊसर जमीन के मोड़ से गुजर रही थी। धूलि-धूसरित चट्टान, घोड़े के बालों की तरह की घास इधर-उधर खड़ी थी। फूल-पेड़ों के साथ 'बओबाब' के पेड़ झांक रहे थे। हरी-भरी और लिपटी जंगली बेलें लटक रही थीं। कहीं-कहीं काप्पिरि के सिरों की तरह कंटीली झाड़ियां थीं। फिर कहीं हड्डियों-से कांटेदार पौधों का झुंड था। उन पेड़ों पर चिड़ियों ने घोंसला बनाया था। दीमक भूतों की तरह इधर-उधर उस सुनसान जगह पर पहरा दे रहे थे। यह दृश्य मन में खुशी नहीं बल्कि खौफ ही पैदा करते हैं।

"आप कहां नौकरी करते हैं? सरकारी दफ्तर में या बाग में?" उसने मेरे चेहरे की ओर देखकर अदब से पूछा।

"मैं अफ्रीका के दर्शन करने आया हूं। एक घुमक्कड़ हूं।" बताने पर अपनी नीली नजरों से एक मुस्कान बिखेरकर उसने मेरी तरफ देखा।

"सच?" वह मेरे नजदीक आकर बैठ गया। अपना परिचय उसने यों दिया—"मेरा नाम 'साली' है। मेरे बाबूजी नय्यारि के प्लांटर थे। बदतमीज होने के नाते उन्होंने मेरी उपेक्षा की है। अफ्रीका के आंतरिक सौंदर्य का आस्वादन करता हुआ मैं यों ही घूम रहा हूं—मेरी जिंदगी का इतिहास इतना ही है।"

बाद में मुझे गोमस से मालूम हुआ कि 'साली' ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का एक स्नातक है और उसके पिताजी केनिया के अमीर अंग्रेज हैं।

मैंने जेब से सिगरेट-केस बाहर निकालकर 'साली' की ओर बढ़ा दिया।

"शुक्रिया! मैं धूमपान नहीं करता।" साली बीयर के गिलास को चूमकर हंस पड़ा।

"अफ्रीका पहुंचे कितना अर्सा हो गया?" साली ने पूछा।

"छः मास।"

"इन छः महीनों के भीतर क्या तुम एक मर्तबा भी अफ्रीका का आंतरिक सौंदर्य देख पाए हो?"

क्या बताऊं, यह सोचकर मैं मग्न रह गया। अफ्रीका का आंतरिक सौंदर्य ? वह क्या है ?

"क्या आपने 'पोंपि' शराब चखी है ? पुरानी खट्टी पोंपि शराब।"

"नहीं।"

"उस देहाती शराब को एक दफा चखकर जरूर देखना। अफ्रीका की जिंदगी आपके मस्तिष्क में हमेशा के लिए रह जाएगी। और काफ्रियों के साथ नाच-गाना ?" साली ने अगला सवाल पूछा।

"नहीं।"

" 'गोमा' में भाग लेकर एक दफा नाच लो, अफ्रीका के दिल के साथ धड़कने का अनुभव होगा।"

मैंने बताया, "हां, शायद। पर यहां के अगणित झुरमुटों और चट्टानों को देख-देखकर मैं अनमना-सा हो गया हूं।"

साली ने बीयर का घूंट लेते हुए कहा, "तुम बाहरी दृश्यों पर ही ध्यान दे रहे हो। वह काफी नहीं है। बाहरी खूबसूरती के प्राण नहीं होते। सौंदर्य की जान उसके 'मिस्टिसिज्म' में है।"

सिग्नल न मिलने के कारण गाड़ी पहाड़ की तराई में खड़ी हो गई।

"कितना खूबसूरत दृश्य है ?" साली ने कहा।

"कैसा दृश्य ?" मैंने पूछा। विकृत चट्टानों के अलावा मैंने वहां और कुछ नहीं देखा।

"देखो, उधर चट्टान के बीच खड़ा वह पौधा।" साली ने इशारा किया।

मैंने देखा, हमारे सामने रेल की पटरियों के नजदीक छोटी-सी चट्टान के छोर पर एक जंगली पौधा खड़ा था—इन्सान की छाती की हड्डियों की आकृति में टेढ़ा-मेढ़ा कांटों से भरा एक पौधा।

मैंने पूछा, "इसमें खूबसूरती कहां है ?"

"ध्यान से देखो।" साली ने बताया, "प्रकृति की गर्मी और रुलाई में शामिल सानंद नृत्य करता क्या तुम्हें दिखाई नहीं पड़ता ?"

ध्यान से देखने पर मुझे लगा कि साली की बात में सच्चाई है। वह पौधा अपने हाथों से भाव-मुद्रा दिखाकर तन्मयता से नृत्य कर रहा

है। एक नटराज नृत्य की प्रतीति !

"पराग की तरह उसमें छिपे हुए छोटे फूलों को देखो। इतने अधिक ताजे और मुग्ध कुसुम क्या तुमने और कहीं देखे हैं ?"

मैंने उन कंटीले पौधों की छातियों में बिखरे हुए फूलों को देखा। काली चट्टान के फूल लगे और पीले हरे रंग के परिदृश्य में गाढ़े लाल रंग के बिंदु। 'कहो, क्यों आए मार्ग भूल, छोटे मंजु मुस्काते फूल !' ऊंची आवाज में गाने की ख्वाहिश हुई।

साली ने पूछा, "उस कांटेदार पौधे में छिपे लाल कुसुमों की तरह काप्पिरि वनिताओं के दिल में पलने वाले प्रेम के बारे में तुम्हें कुछ मालूम है ?"

इतनी बेतकल्लुफी से वह बात करेगा, ऐसा मैंने सोचा भी नहीं था। वह गोरा प्रेम की तलाश में एक काप्पिरि वनिता के दिल में झांक रहा है। क्या निजी अनुभव है ?

रेलगाड़ी सीटी देकर आगे बढ़ी और पुराने कागज जैसे वातावरण में काला धुआं उड़ाती झुरमुटों में घुस गई। मकड़ी-जालों का घूंघट पहने कांटेदार पेड़ों में सूरज की लाल किरणें पड़ रही हैं। दूर पर किविक्यू पहाड़ सिर उठाए खड़ा था।

अफ्रीका के अस्तमय दृश्यों पर विचरने वाली मेरी नजरों को देखकर साली ने कहा, "दिन विदा लेने जा रहा है। लौटते वक्त सबों में एक खास खूबसूरती होती है...।"

"शायद !"

किविक्यू पहाड़ों में ओझल होने वाले सूरज की ओर देखकर साली ने कहा, "क्वहे-री !"

मुझे उसका मतलब नहीं मालूम था। मैंने जरा आश्चर्य से पूछा, "क्या ?"

साली ने मुझसे पूछा, "विदा लेते वक्त आप लोग भारतीय भाषा में क्या कहेंगे ?"

मैंने याद करने की कोशिश की। एक ही शब्द हमारे यहां नहीं है। उत्तर भारतीय 'नमस्ते' या 'शुक्रिया' कहेंगे। और मलयाली कहेंगे,

'ऐसा ही हो—फिर देखेंगे।'

मैंने साली को बताया कि भारतीय विदा लेते वक्त 'नमस्ते' कहेंगे।

"अच्छा नही लगता, 'नमस्ते-नमस्ते'—संगीतात्मक नही है। अंग्रेजी में 'गुड्बाय' आदि कहेंगे। ये भी दिल को नही छूते। फ्रेंच वालो की विदाई का शब्द कुछ अधिक आकर्षक लगता है। लेकिन जितने शब्द मैंने सुने हैं, उनमे सबसे अधिक सरल, मधुर और संगीतात्मक शब्द काफ्फिरियो की जबान मे है—क्वहे-री।"

बोतल मे बची बीयर गिलास मे उंडेलकर सिर झुकाते हुए साली ने इस शब्द का फिर एक दफा सुरीली आवाज मे उच्चारण किया—"क्वहे-री!"

अपने अभिन्न मित्र की प्रेम-कहानी सुनने में बोर लगती है। किंतु साली की प्रेम-कहानी सुनने की मेरी साध थी। मजबूर किये बगैर वह मुझे सुनाने लगा। बीयर की एक और बोतल का आदेश दिया जा चुका था।

बाहर धूप कम होने लगी। आबाद पहाड की तराइयां फीकी हुई नजर आई। किक्कियू लोग भेडो के साथ-साथ झोपडियो में वापस लौट रहे हैं। कुछ दूर पर उनकी झोपडिया नजर आ रही है।

"मैं वह कहानी तुम्हें सुनाने जा रहा हू'''।" साली ने दूर पर स्थित किक्कियू गाव की ओर देखते हुए कहा।

"अफ्रीका के नाच के सबध में खोज करने का जोश उन दिनो मुझमें था। मैं काफ्फिरियों के साथ अधिक मेल-जोल रखता हूं, ऐसी अफवाहे मेरे संबंध में 'गोरे' समाज मे प्रचलित थीं। न तो मैं अपनी करनी पर पछताया, न अपने आलोचको से झगडा मोल लिया। क्योकि मुझे पूरा भरोसा था कि मैं अपने समाज के और लोगो से अधिक ईमानदार और नेक हू। मैं काफ्फिरि मोहल्लों में जाकर नाचा करता था और कभी-कभी उनकी झोपड़ियो मे रात भी बिताता था। उनके नाच के संबंध मे पूरी जानकारी हासिल करने की मेरी ख्वाहिश थी।

यह आगे चलकर काफ्फिरियो की जिंदगी मे घुलने-मिलने और सभ्य समाज से भी बढकर ईमानदार और स्नेह-सिक्त उनके रीति-रिवाज

समझने में बड़ा सहायक सिद्ध हुआ। मैं ज्यों-ज्यों उनके निकट संपर्क में आया, त्यों-त्यों अपने समाज से कटता चला गया। आखिर पिताजी ने मुझे घर से निकाल दिया और मैं किक्कियुओं के संबंध में पढ़ने के वास्ते नय्यारी चला गया।

एक महीना मैं वहां के एक छोटे-से मोहल्ले में रहा। मेरे संबंध में वहां के कुछ काप्पिरियों को शक पैदा हो गया था। उन्हें लगा कि मैं सरकारी खुफिया विभाग का आदमी हूं। देहात का ओझा, गांव के मुखिया का साला, एक गोरे के कुत्ते को चोरी कर उसका मांस खाने वाला एक किक्कियू, सभी मेरे दुश्मन हो गए। अपना रहस्य 'मुसूंगु' (गोरा) खोज निकालेगा, यही ओझा की दहशत का कारण था। मूप्पन (मुखिया) ने मेरे प्रति जो इज्जत और मुहब्बत प्रदर्शित की, उस पर मूप्पन के साले को ईर्ष्या थी। गोरों के खिलाफ सख्त नफरत ही इस बौने काप्पिरि के मन में थी।

मैंने उसकी दुश्मनी की परवाह नहीं की। रात को उनके नृत्यों में शामिल होकर और दिन में अपनी झोंपड़ी के अंदर बैठकर 'प्लास्टर और पेरिस' से नृत्य की भाव-मुद्राएं बनाते हुए मैंने दिन बिताए।

एक दिन रात को झोंपड़ी में 'ब्वाना, ब्वाना' की दबी आवाज की पुकार सुनकर मैं चौंक उठा। मैंने टार्च लेकर रोशनी की। मेरे पैरों के पास एक काप्पिरि लड़की खड़ी थी।

मैंने नाराजगी जाहिर करते हुए पूछा, 'तू कौन है? तुझे क्या चाहिए?'

उसने अपनी नजरों को घुमाते हुए भर्राई आवाज में कहा, 'ब्वाना, तुम्हारी जान लेने के लिए एक काली बाघिन निकल गई है—वह तुम्हारे पैरों को काट लेगी और तुम पैर की बीमारी से मर जाओगे। फौरन यहां से निकल भागो और अपनी जान बचाओ। अब मैं जा रही हूं।'

वह बाहर निकलकर अंधेरी झाड़ियों में गायब हो गई।

मैंने आंखें फाड़कर चारों ओर देखा। शक था कि यह स्वप्न होगा। नहीं, स्वप्न नहीं है। उस लड़की को नाच करने वालों की मंडली में मैंने देखा था। वह कई बार मेरी ओर देखकर हंसी थी।